पुलिस झण्डा दिवस
2020

एच.सी. अवस्थी
आई.पी.एस.

पुलिस महानिदेशक,
उत्तर प्रदेश
पुलिस मुख्यालय (सिग्नेचर बिल्डिंग)
गोमती नगर विस्तार, लखनऊ

सन्देश

प्रिय साथियों,

ध्वज हमारे चरित्र का दर्पण एवं गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है, जिसमें हमने देश सेवा एवं लोकसेवा में अपने कौशल, शौर्य एवं कर्तव्य परायणता से अप्रतिम योगदान दिया है, जिसमें सर्वोच्च आत्मबलिदान भी सम्मिलित है। यह ध्वज हमारे लिए प्रेरणादायी है तथा इस ध्वज के फहरने भर से हम सभी में एक नई ऊर्जा का संचार होता है।

ध्वज की अवधारणा की जड़ें वेद और पुराण में भी हैं। पुराणों में भी देवताओं के झण्डों का वर्णन मिलता है। भविष्य महापुराण में उल्लेख मिलता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में देवताओं और असुरों में भी जो भीषण युद्ध हुआ था, उसमें देवताओं ने अपने–अपने रथों पर जिन–जिन चिन्हों की कल्पना की थी, वह ही उनके ध्वज के प्रतीक यानी चिन्ह बने।

ध्वज का महत्व हम महाभारत काल में भी पाते हैं। कुरूक्षेत्र में कौरव एवं पाण्डव के मध्य हुए धर्मयुद्ध में अर्जुन के रथ पर भी एक ध्वज पताका थी। इतिहास गवाह है कि इसी ध्वज पताका की प्रेरणा से धर्म की अधर्म पर विजय हुई।

मध्य कालीन इतिहास में राजा या सम्राट की सेनायें भी ध्वज का वहन करती थीं। अगर सेना ने दुश्मन के हाथों अपना ध्वज खो दिया है, तो इसका तात्पर्य अपमान है और अगर दुश्मन के ध्वज पर कब्जा कर लेती हैं, तो इसका तात्पर्य एक सम्मान है।

19वीं शताब्दी में ध्वज का इतिहास नेपोलियन बोनापार्ट से जुड़ा हुआ है। विभिन्न युद्ध मुहिमों में जाने वाली सैन्य टुकड़ियॉ अलग–अलग ध्वजों के माध्यम से अपनी पहचान बनाये रखती थीं तथा युद्ध भूमि पर निरन्तर इस ध्वज को फहराये रखती थीं। कालान्तर में विभिन्न मुहिमों में शामिल रहे टुकड़ियों की पहचान के लिए नेपोलियन द्वारा सीने पर बायें, हृदय के ऊपर उन्हीं ध्वजों के प्रतीक रिबन के रूप में धारण करने की परम्परा प्रारम्भ की गयी थी। उसी फ्रान्सीसी परम्परा को हम सभी वर्दीधारी बलों द्वारा अंगीकृत किया गया है।

20वी शताब्दी में भारत के राष्ट्रपति का रंग पुरस्कार सर्वोच्च सम्मान है, जिसे भारत की किसी भी सैन्य इकाई को दिया जा सकता है। इसे निशान के रूप में भी जाना जाता है, जो एक प्रतीक है, जिसे सभी यूनिट अधिकारियों द्वारा अपनी वर्दी के बायें हाथ की आस्तीन में पहना जायेगा। जबकि रंग को युद्ध में ले जाने की प्रथा बन्द हो गयी है, लेकिन सशस्त्र एवं पुलिस बलों में आज भी रंग प्राप्त करने, धारण करने और परेड करने की परम्परा जारी है।

पुलिस ध्वज हमारे गौरवशाली अतीत का जीवन्त प्रतीक भी है। पुलिस विभाग की अहर्निश जन–सेवा, कर्तव्यपरायणता, पराक्रम, शौर्य तथा आत्म बलिदान की अनगिनत गाथाओं के बाद पुलिस ध्वज की प्राप्ति होती है।

उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग के वीर जवानों के शौर्य, कर्तव्य परायणता एवं उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा के फलस्वरूप ही भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जी द्वारा सर्वप्रथम उ0प्र0 पुलिस को पुलिस ध्वज प्रदान किया गया था। उ0प्र0 पुलिस पूरे भारत का प्रथम राज्य पुलिस बल है, जिसे उसके अप्रतिम

योगदान के फलस्वरूप पुलिस कलर अर्थात पुलिस ध्वज प्रदान किया गया है, जो हम सब के लिए गर्व का विषय है।

23 नवम्बर 1952 को पुलिस लाइन्स लखनऊ के परेड ग्राउण्ड में वार्षिक पुलिस परेड के अवसर पर राष्ट्र के प्रथम प्रधानमंत्री द्वारा पुलिस एवं पीएसी ध्वज प्रदान किये गये। ध्वज का आकार 4 फिट लम्बा एवं 3 फिट चौड़ा है। यह दो रंगो का है, जिसमें ऊपर लाल रंग एवं नीचे की ओर नीला रंग है, मध्य में उ0प्र0 पुलिस का प्रतीक चिन्ह है।

इसके बाद मुम्बई पुलिस (पुलिस कमिश्नरेट) को 1954, महाराष्ट्र पुलिस को 1961, जम्मू एण्ड कश्मीर पुलिस को 2003, तमिलनाडु पुलिस को 2009, त्रिपुरा पुलिस को 2012, हिमांचल प्रदेश पुलिस एवं गुजरात पुलिस को 2019 में यह सम्मानप्राप्त हुआ है।

ब्रिटिश उपनिवेश के **''पुलिस–बल से पुलिस विभाग''** तक की यात्रा उ0प्र0 पुलिस के लिए एक गौरव गाथा है, जिसका प्रत्येक पृष्ठ भारत के आधुनिक इतिहास का प्रामाणिक साक्ष्य है। वर्ष 1860 में श्री एच0एम0 कोर्ट की अध्यक्षता में पुलिस कमीशन द्वारा पुलिस एक्ट 1861 के तहत सिविल कान्सटेबुलरी के गठन की योजना बनी, तब से सर सीताराम पुलिस पुनर्गठन कमेटी एवं उसके बाद वर्ष 1960 में उ0प्र0 पुलिस कमीशन तक आते–आते कानून की सीमा में पुलिस व्यवस्था को संचालित करने की रीति–नीति बनायी गयी।

उत्तर प्रदेश पुलिस कमीशन (1960–61) की रिपोर्ट में पुलिस मुख्यालय को इलाहाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित करने की संस्तुति की गयी थी। इसके बाद उ0प्र0 पुलिस विभाग में विभिन्न इकाईयों का आविर्भाव हुआ है, जिससे यह विभाग एक समग्र और सम्पूर्ण रूप से जनता की सेवा में तत्पर है। इसी श्रंखला में समय–समय पर पुलिस विभाग में सीबीसीआईडी, सतर्कता अधिष्ठान, ई0ओ0डब्ल्यू0, तकनीकी सेवायें, लॉजिस्टिक्स, यातायात निदेशालय इत्यादि इकाईयां लखनऊ में स्थापित की गयीं तथा एस0टी0एफ0, ए0टी0एस0, 112 एवं 1090(वीमेन पावर लाइन)का गठन किया गया है। हाल ही में साइबर थाने, ई0ओ0डब्ल्यू0 थाना, पावर कारपोरेशन थाना एवं विजिलेन्स थाना का गठन किया गया है। इसके अतिरिक्त स्पेशल सिक्योरिटी फोर्स के गठन एवं फोरेन्सिक यूनीवर्सिटी की स्थापना हेतु कार्यवाही प्रचलित है।

हाल में वैश्विक महामारी कोरोना की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पुलिस की भूमिका सराहनीय रही है। वर्तमान बदलते परिदृश्य एवं उन्नत तकनीक की सुलभता के युग में अपराध एवं अपराधियों से निपटने के लिए हमको नित नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हमारे प्रदेश की पुलिस ने इन चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते हुए अपराध नियंत्रण, कानून व्यवस्था कायम करने के साथ–साथ पीड़ित आम जनता के व्यक्तियों के पास सहायता हेतु द्रुतगति से पहुंचकर उन्हें राहत पहुंचाने का काम पूरी कुशलता से किया है। इसके साथ ही हमारी पुलिस साइबर अपराध, आतंकवाद, साम्प्रदायिक तनाव एवं आन्तरिक सुरक्षा जैसी चुनौतियों का भी पूर्ण दक्षता से सामना कर रही है।

झण्डा दिवस के अवसर पर मैं आप सभी लोगों को स्मरण कराना चाहता हूं कि जिस कर्तव्यपरायणता, शौर्य, निष्ठा, लगन के कारण उत्तर प्रदेश पुलिस को यह ध्वज प्राप्त हुआ, उस ध्वज की गरिमा को हमें हमेशा बनाये रखना है।

मैं आप सभी को झण्डा दिवस के अवसर पर बहुत बहुत बधाई देता हूँ ।

जय हिन्द ।

(एच.सी. अवस्थी)
पुलिस महानिदेशक,
उत्तर प्रदेश

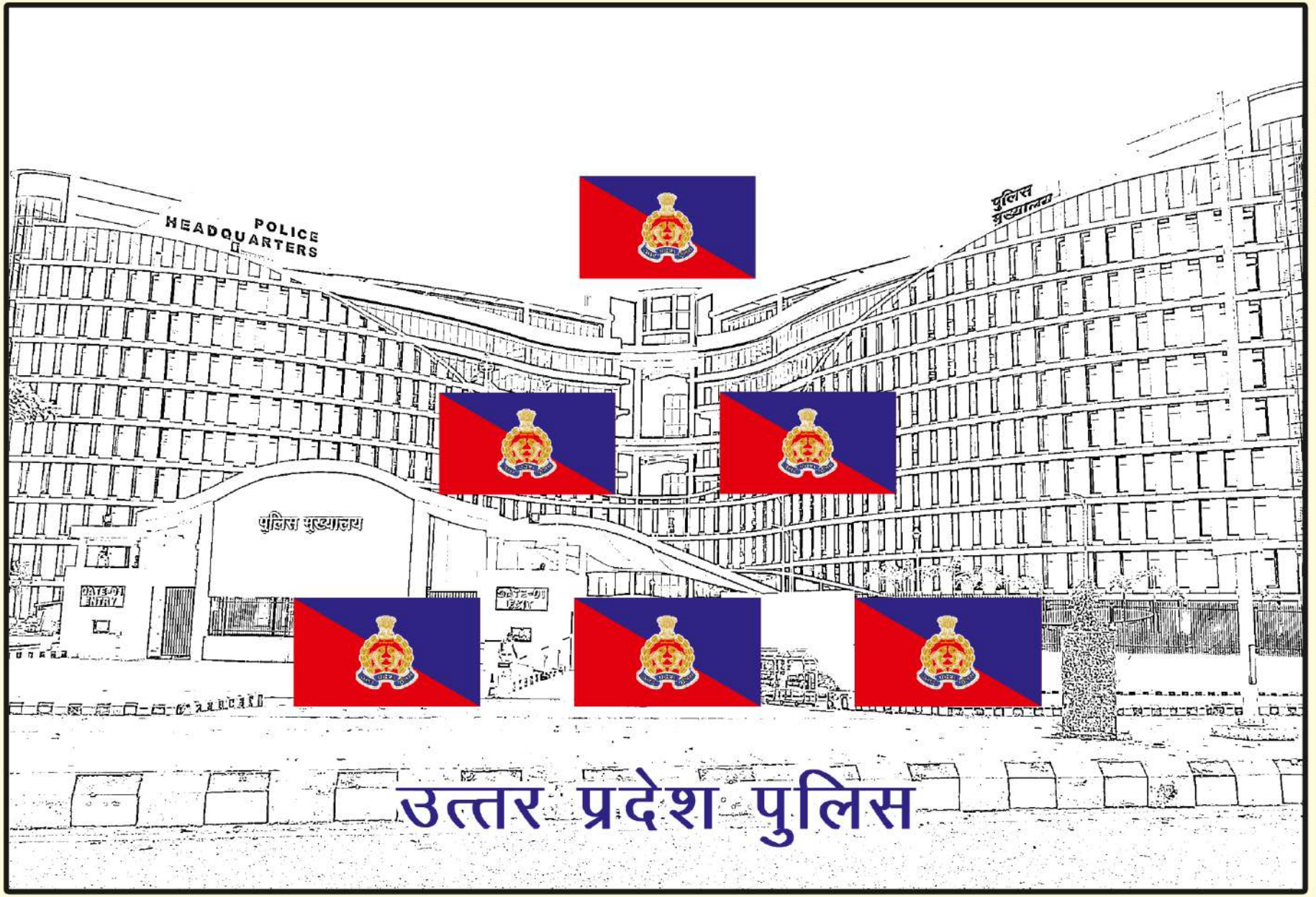

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257—गोलागंज लखनऊ